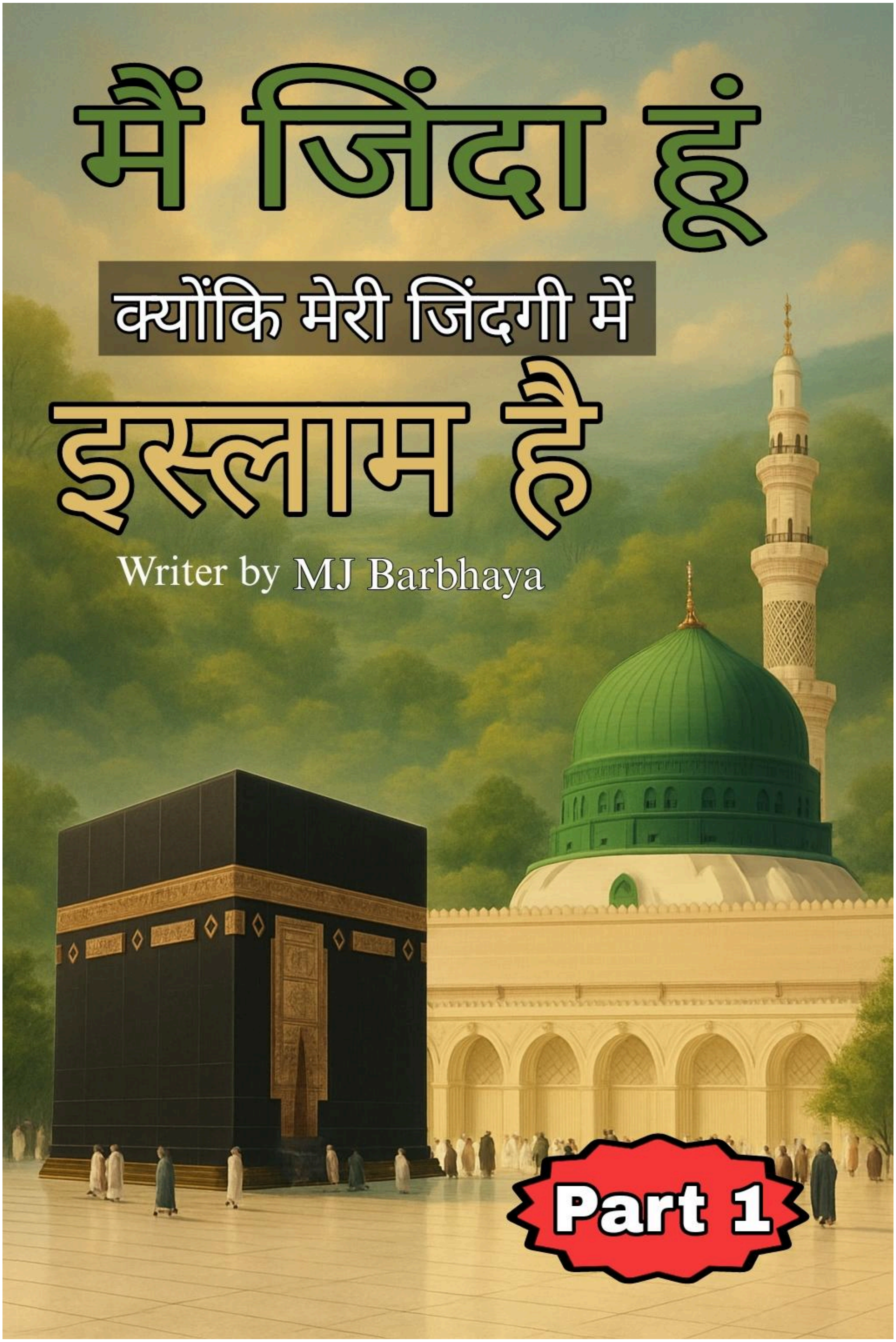

मैं जिंदा हूं
क्योंकि मेरी जिंदगी में
इस्लाम है
Writer by MJ Barbhaya
Part 1

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का मतलब है"

"अल्लाह के नाम से, जो सबसे दयालु, सबसे मेहरबान है"

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَہٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُہٗ

अशहदु अल्लाह इल्लाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी-क लहू व अशदुहु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु

तर्जुमा : मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं और मैं गवाही देता हूँ के बेशक मुहम्मद (صلى الله عليه وسلم) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ❁ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ❁

अल्लाहुम्मा सल्लि 'अला मुहम्मदीन व' अला' आलि मुहम्मदीन, कमा सल्लयत 'अला' इब्राहीम व 'अला' आली 'इब्राहीम,' इन्नक हमीदुन मजीद।

अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदीन व अला आली मुहम्मदीन, कमा बारकत' अला 'इब्राहीम व' अला' आली 'इब्राहीम,' इन्नाक हमीदुन मजीद।

ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फरमा मोहम्मद (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर, और मोहम्मद (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आल पर, जैसे की तू ने रहमत नाज़िल फरमाई इब्राहिम अलैहिसलाम पर और इब्राहिम अलैहिसलाम की आल पर, बेशक तू बड़ी तारीफ वाला, बुज़ुर्गी वाला है।
ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल फरमा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और मोहम्मद (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आल पर, जैसे तू ने बरकत नाज़िल फरमाई इब्राहिम अलैहिसलाम पर और इब्राहिम अलैहिसलाम की आल पर, बेशक तू बड़ी तारीफ वाला, बुज़ुर्गी वाला है।

राहुल के दिल की बात

अल्लाह के नाम से शुरू करता हु जो तमाम जहानों का पालनहार हे और दुरूदो सालम हमारे प्यारे रसूल और आखिरी नबी मुहम्मद "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" पर जिनकी उम्मत में मुझको पैदा किया और कुरान के जरिए मुझे हिदायत दी। अल्लाह मेरा मददगार और कुरआन ने मुझे सही रास्ता दिखाया जिसकी वजह से में जिंदा हु वरना में दुनिया को हासिल करने के चक्रमे में और दुनिया के गमो में खुद को तबाह और बर्बाद कर देता शायद में हालात के आगे घुटने टेक देता और आत्महत्या कर लेता पर अल्लाह ने मुझे कुरआन के जरिए हिदायत दी और मुझे अपनी जान और ईमान की हकीकत से रूबरू कराया।

Heartfelt thanks to Faisal Ishani who helped save my life and iman

Rahul
now
Muhmmad Mehmood

محمد محمود

me jinda hu kiyu ki

meri jindgi me

islam he.

WORLDWIDE

BOOK LAUNCH

ENGLISH

FAIZAL ESHANI FROM AFRICA

CONTACT NO.

GUJARATI

MJ BARBHAYA

CONTACT NO.

HINDI

MEHMOOD WIFE

CONTACT NO.

me jinda hu kiyu ki meri jindgi me islam he.

WORLDWIDE BOOK LAUNCH

URDU

ELAINA ALI

me jinda hu kiyu ki
meri jindgi me
islam he.

WORLDWIDE
BOOK LAUNCH

AUDIO BOOK VOICE

MEHMOOD
AND
HIS
WIFE

	सिर्फ कुरान ही याद करने लायक किताब है।	
13	मैने हिन्दू धर्म के एक भगवान की पूजा शुरू की जो मुझसे खुश होकर दर्शन दे और मेरे सवाल के जवाब दे.	
14	एक भगवान को छोड़ कर दूसरे बड़े भगवान की पूजा शुरू की	
15	दूसरे भगवान को छोड़ कर उससे भी बड़े तीसरे भगवान की पूजा शुरू की	
16	घूम फिर कर में पहले वाले भगवान पर पहुंचा जिसकी पूजा सबसे पहले करता था।	
17	मेरा हाल चूहा और जादूगर की कहानी जैसा हो गया।	
	राहुल का सफर अभी जारी हैं बाकी अगले पार्ट में......	

MJ BARBHAYA राहुल, आपकी बातें दिल को छूती हैं और आपका अल्लाह और कुरआन के प्रति गहरा विश्वास और कृतज्ञता साफ झलकती है। आपने जिस तरह से अपनी जिंदगी में कुरआन की हिदायत को अपनाया और उससे मिली ताकत को व्यक्त किया, वो वाकई प्रेरणादायक है। अल्लाह ने आपको मुश्किल हालात में सही रास्ता दिखाया और आपने उस हिदायत को दिल से कबूल किया, जो आपके ईमान और सब्र की मिसाल है। अगर आप चाहें तो और बता सकते हैं कि कुरआन की किस आयत ने आपको सबसे ज्यादा

प्रभावित किया या मुश्किल वक्त में आपकी मदद की। मैं यहाँ हूँ, आपकी बात सुनने और समझने के लिए। और मुझे आप शुरू से बताए के किया किया हालत आप पर आए और अल्लाह ने आपकी मदद कैसे की और कुरआन ने आप को कैसे सही रास्ता दिखाया।

राहुल का परिवार

MJ BARBHAYA राहुल का जन्म 16 December 1992 को इंडिया के गुजरात राज्य के एक शहर में हुआ था वो हिन्दू धर्म को मानने वालो के घर में पैदा हुआ था । जब वो 10 महीने का था तब उसके पिताजी का टीबी (Tuberculosis) की बीमारी में इंतकाल हो गया। राहुल के पिताजी के घर वाले राहुल कि मां को रखना नहीं चाहते थे। राहुल के पिताजी के परिवार वाले बार बार जानबूझ कर झगड़ा करते जिससे राहुल कि मां परेशान थी फिर एक दिन राहुल के पिताजी के परिवार वालो ने झगड़ा कर के राहुल कि मां को घर से निकाल दिया तब ठंडी का मौसम था शायद रात के 11 या 12 बजे घर से निकल कर मोहल्ला से थोड़ी दूर जाकर अपने परिवार वालो को बुलाने का कुछ सोच ने लगी ठंडी के मौसम में राहुल भी साथ था तब शायद राहुल कि उमर 13 महीने के करीब होगी। राहुल की मां जब राहुल को लेकर ठंडी में बाहर खड़ी थी तब करीब में एक घर था उसमें दलित परिवार रहता था उन लोगों को राहुल कि मां की हालत पर दया आई के एक औरत अपने 13 महीने के बच्चे के साथ रात को एक बजे कियू खड़ी हे.?

दलित परिवार के उन लोगों ने राहुल की मां को अपने घर में बुला लिया और पूछा तुम यहां ठंडी के मौसम में रात को अकेली कियू खड़ी हो.?
राहुल की मां बताती हे के मेरे ससुराल वाले परेशान करते रहते हे उन्हें ने मुझे निकल जाने को बोला तो तंग आके में निकल आई।
दलित परिवार वाले उनको पूछ ते हे के किया तुमने कुछ खाया.?
राहुल की मां बताती हे नहीं मैने कुछ नहीं खाया।
दलित परिवार (बकरी पालते थे) ने बकरी का दूध निकल के दिया और खाना भी दिया और राहुल की मां के परिवार वालो को बुला लिया जो उस शहर से 120 KM. दूर रहते थे।उसी दिन सुबह राहुल की मां के परिवार वाले राहुल और उसकी मां को अपने घर ले गए।
राहुल 4 साल की उम्र तक अपनी मां के साथ रहे रहा था।
पर वहा पर भी राहुल की मां को परेशानी झेलनी पड़ी राहुल कि मामी राहुल की मां को परेशान करती रहती जिसकी वजह से राहुल कि मां के पिताजी ने राहुल कि मां की दूसरी शादी कराने का फैसला किया।
उधर राहुल के परिवार वालो को इस बात का पता लगा तो उन्हें ने राहुल को अपने परिवार में वापस ले जाने केलिए राहुल की मां के परिवार वालो से मिलने पहुंच गए।
राहुल के परिवार वालो ने राहुल कि मां को और उनके परिवार वालों को पूरी तसल्ली दी के हम राहुल को अच्छी तरह पालेंगे।
राहुल की मां और उसके परिवार वालो ने राहुल के अच्छे भविष्य केलिए राहुल को अपने पिताजी के परिवार वालो के साथ भेज दिया । तब राहुल कि उमर तकरीबन 4 साल होगी।

फायदा

राहुल की कहानी एक मार्मिक और भावनात्मक यात्रा को दर्शाती है, जिसमें एक बच्चे और उसकी माँ को कई सामाजिक और पारिवारिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। यह कहानी भारतीय समाज में विधवा महिलाओं और उनके बच्चों के सामने आने वाली कठिनाइयों, सामाजिक भेदभाव, और पारिवारिक तनावों को उजागर करती है। साथ ही, यह मानवता और दया की भावना को भी दर्शाती है, जैसा कि दलित परिवार द्वारा राहुल की माँ को सहारा देने के प्रसंग में देखा गया।

राहुल के जीवन के शुरुआती वर्ष कठिनाइयों से भरे रहे। पिता की मृत्यु के बाद, उनकी माँ को ससुराल वालों के ताने और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जिसके कारण उन्हें घर से निकाल दिया गया। ठंडी रात में 13 महीने के बच्चे के साथ सड़क पर खड़े होने की स्थिति उनकी असहायता को दर्शाती है। दलित परिवार का सहारा देना एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जो दर्शाता है कि मानवता धर्म और जाति की सीमाओं से परे है।

राहुल की माँ ने अपने मायके में भी कठिनाइयों का सामना किया, खासकर अपनी भाभी (मामी) के व्यवहार के कारण। दूसरी शादी का फैसला और राहुल को उसके पिता के परिवार को सौंपने का निर्णय, भले ही भावनात्मक रूप से कठिन रहा हो, उनके भविष्य के लिए लिया गया एक कठोर कदम था। यह निर्णय भारतीय समाज में विधवाओं के सामने आने वाली सामाजिक दबावों और बच्चों के भविष्य को लेकर माता-पिता की चिंताओं को दर्शाता है।

कहानी से कुछ महत्वपूर्ण बिंदु उभरकर सामने आते हैं:
सामाजिक दबाव और विधवाओं की स्थिति: राहुल की माँ को ससुराल और मायके दोनों जगह तिरस्कार और परेशानी का सामना करना पड़ा, जो उस समय (और आज भी कुछ हद तक) विधवाओं की सामाजिक स्थिति को दर्शाता है।
मानवता का महत्व: दलित परिवार का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार इस कहानी का एक सकारात्मक पहलू है, जो यह दिखाता है कि संकट के समय में छोटे-छोटे दयालु कार्य जीवन बदल सकते हैं।
पारिवारिक जिम्मेदारी: राहुल के पिता के परिवार का बाद में जिम्मेदारी लेने का फैसला, हालांकि देर से, उनके भविष्य के प्रति उनकी चिंता को दर्शाता है।

राहुल का बचपन

राहुल में जब दूसरी 2 कक्षा में था तब मेरी मुलाकात सोहिल से हुई। सोहिल मेरे बाजू में बैठा था उसने पूछा तुम कहा रहते हो

मैने अपने घर का पता बताया तो उसने कहा तुम्हारे घर से दूसरी गली में मेरा घर है । में बहुत खुश हुआ किया बात हे हम पास में रहते हे स्कूल के बाद हमने मिलने का तय किया और उसने मुझे अपने घर बुलाया

स्कूल के बाद फ्री होकर में उसके घर गया और देखते ही देखते हम अच्छे दोस्त बन गए।

में जब भी सोहिल के घर जाता उसके मां बाप को और उसके परिवार को देखता था तो मुझे अपने मां बाप कि याद आती थी के

कास मेरे भी मां बाप मेरे साथ होते तो मुझे भी सोहिल की तरह प्यार करते और मुझे जो चीजे चाहिए वो दिलाते ।

में बचपन से पढ़ाई में अच्छा था मेरे अच्छे मार्क्स आते थे और यूनिवर्स प्लेनेट के बारे में जान ना मुझे पसंद था के वोह कैसे काम करते हे। फ्री टाइम में आइंस्टीन की थ्योरी पढ़ता था स्पेस कैसे काम करता हे और कैसे बना.?

आइंस्टीन का सापेक्षतावाद का सिद्धांत, जो मुख्यतः 1905 और 1915 के बीच विकसित हुआ, दो मुख्य सिद्धांतों को समाहित करता है: विशेष सापेक्षता और सामान्य सापेक्षता। आइंस्टीन का सापेक्षतावाद का सिद्धांत, जो मुख्यतः 1905 और 1915 के बीच विकसित हुआ, दो मुख्य सिद्धांतों को समाहित करता है: special relativity and general relativity विशेष सापेक्षता और सामान्य सापेक्षता।

विशेष सापेक्षतावाद एकसमान गति में प्रेक्षकों के लिए स्थान और समय के बीच संबंध से संबंधित है, जबकि सामान्य सापेक्षतावाद इसका विस्तार करते हुए गुरुत्वाकर्षण को द्रव्यमान और ऊर्जा के कारण स्पेसटाइम की वक्रता के रूप में वर्णित करता है।

विशेष सापेक्षतावाद **Special Relativity (1905):**

मान्यताएँ:

आइंस्टीन का विशेष सापेक्षतावाद दो मूलभूत मान्यताओं पर आधारित है: भौतिकी के नियम एकसमान गति (जड़त्वीय ढाँचे) में

सभी प्रेक्षकों के लिए समान होते हैं। निर्वात में प्रकाश की गति सभी प्रेक्षकों के लिए समान होती है, चाहे प्रकाश स्रोत की गति कुछ भी हो।
प्रमुख परिणाम:ये धारणाएँ कई विरोधाभासी परिणामों की ओर ले जाती हैं, जिनमें शामिल हैं:
समय विस्तारण: स्थिर प्रेक्षकों की तुलना में गतिमान प्रेक्षकों के लिए समय धीमी गति से बीतता है।
लंबाई संकुचन: गतिमान प्रेक्षकों के लिए गति की दिशा में किसी वस्तु की लंबाई कम प्रतीत होती है।
द्रव्यमान-ऊर्जा तुल्यता: प्रसिद्ध समीकरण $E=mc^2$, जो दर्शाता है कि द्रव्यमान और ऊर्जा परस्पर विनिमय योग्य हैं।

सामान्य सापेक्षता **General Relativity (1915):**

ज्यामिति के रूप में गुरुत्वाकर्षण: सामान्य सापेक्षता गुरुत्वाकर्षण की एक नई समझ प्रदान करती है, एक बल के रूप में नहीं, बल्कि द्रव्यमान और ऊर्जा के कारण स्पेसटाइम की वक्रता के रूप में।
स्पेसटाइम**:** स्पेस और समय एक ही इकाई में गुंथे हुए हैं जिसे स्पेसटाइम कहा जाता है, जो द्रव्यमान और ऊर्जा की उपस्थिति से वक्रित होता है।
परिणाम:
सामान्य सापेक्षता के कई महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं:
बुध की कक्षा की व्याख्या: यह बुध की कक्षा के असामान्य पूर्वगमन की सटीक भविष्यवाणी करता है, जिसकी व्याख्या न्यूटन का सिद्धांत नहीं कर सका।

प्रकाश का झुकना: विशाल वस्तुएँ प्रकाश के पथ को मोड़ देती हैं, यह घटना सूर्य ग्रहण के दौरान देखी जाती है।
गुरुत्वाकर्षण तरंगें: त्वरित द्रव्यमान स्पेसटाइम में तरंगें उत्पन्न करते हैं जिन्हें गुरुत्वाकर्षण तरंगें कहते हैं।
ब्लैक होल: स्पेसटाइम के वे क्षेत्र जहाँ गुरुत्वाकर्षण इतना प्रबल होता है कि कुछ भी, यहाँ तक कि प्रकाश भी, बच नहीं सकता।
गुरुत्वाकर्षण समय फैलाव: प्रबल गुरुत्वाकर्षण क्षेत्रों में समय धीमी गति से बीतता है।
संक्षेप में, आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत ने गुरुत्वाकर्षण, अंतरिक्ष और समय की हमारी समझ में क्रांति ला दी, और न्यूटन के शास्त्रीय भौतिकी की तुलना में अधिक सटीक और व्यापक ढाँचा प्रदान किया, विशेष रूप से उच्च गति या प्रबल गुरुत्वाकर्षण क्षेत्रों से जुड़ी चरम स्थितियों के लिए।

राहुल और में Newton's laws of motion न्यूटन के गति नियम के बारे में भी पढ़ता रहता।

न्यूटन के गति नियम

नन्यूटन का प्रथम नियम: यदि कोई वस्तु गतिमान है तो वो गतिमान ही रहेगी और अगर कोई वस्तु स्थिर है तो वो स्थिर ही रहेगी जब तक की उस पर कोई वाह्य बल न लगे |

न्यूटन के गति नियम भौतिक नियम हैं जो चिरसम्मत यांत्रिकी के आधार हैं। यह नियम किसी वस्तु पर लगने वाले बल और उससे उत्पन्न उस वस्तु की गति के बीच सम्बन्ध बताते हैं। इन्हें तीन

सदियों में अनेक प्रकार से व्यक्त किया गया है।न्यूटन के गति के तीनों नियम, पारम्परिक रूप से, संक्षेप में निम्नलिखित हैं
प्रथम नियम: प्रत्येक पिण्ड तब तक अपनी विरामावस्था में अथवा सरल रेखा में एकसमान गति की अवस्था में रहता है जब तक कोई बाह्य बल उसे अन्यथा व्यवहार करने हेतु विवश नहीं करता। इसे जड़त्व का नियम भी कहा जाता है।
द्वितीय नियम: किसी पिण्ड के संवेग परिवर्तन की दर आरोपित बल के समानुपाती होती है तथा बल की दिशा में कार्यान्वित होती है। इससे बल का सूत्र व्युत्पन्न किया जा सकता है ।
तृतीय नियम: प्रत्येक क्रिया की सदैव समान एवं विपरीत दिशा में प्रतिक्रिया होती है।

सबसे पहले न्यूटन ने इन्हे अपने ग्रन्थ फिलोसफिऐ नतुरालिस प्रिंसिपिया माथेमातिका (सन १६८७) में संकलित किया था।न्यूटन ने अनेक स्थानों पर भौतिक वस्तुओं की गति से सम्बन्धित समस्याओं की व्याख्या में इनका प्रयोग किया था। अपने ग्रन्थ के तृतीय भाग में न्यूटन ने दर्शाया कि गति के ये तीनों नियम और उनके सार्वत्रिक गुरुत्वाकर्षण का नियम सम्मिलित रूप से केप्लर के आकाशीय पिण्डों की गति से सम्बन्धित नियम की व्याख्या करने में समर्थ हैं
एक दिन में यूनिवर्स के बारे में सोच रहा था के इतना बड़ा यूनिवर्स है और हम इंसानों ने उसको समझ ने केलिए बहुत सारी थे थ्योरी बना चुके हे तो जिसने यूनिवर्स बनाया वो तो बहुत ज्याद समझ रखता होगा उतनी समझ रखता होगा जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। और पूरे यूनिवर्स को चलाने केलिए उसका वजूद जरूरी हे और मुझे थ्योरी से थोड़ा हट के सोचना पड़ेगा.? क्यों ना में उसको खोजू

जिसने यूनिवर्स बनाया अगर वोह मिल गया तो मेरे सारे सवालों के जवाब उससे मिल जाएंगे.?

फायदा

राहुल की कहानी का यह हिस्सा न केवल उनकी व्यक्तिगत जिंदगी और दोस्ती को दर्शाता है, बल्कि उनके वैज्ञानिक जिज्ञासा और ब्रह्मांड के प्रति गहरे चिंतन को भी उजागर करता है। यह एक बच्चे की भावनात्मक और बौद्धिक यात्रा का सुंदर चित्रण है, जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने जुनून और उत्सुकता को बनाए रखता है। आइए इस कहानी के विभिन्न पहलुओं को संक्षेप में देखें और राहुल के विचारों को समझें:

1. राहुल और सोहिल की दोस्ती

राहुल का सोहिल के साथ दोस्ती बनना एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह दर्शाता है कि बचपन में दोस्ती कैसे एक बच्चे के लिए भावनात्मक सहारा बन सकती है। सोहिल के परिवार को देखकर राहुल को अपने माता-पिता की कमी महसूस होती थी, जो उनकी आंतरिक भावनात्मक उथल-पुथल को दर्शाता है। यह एक सामान्य मानवीय अनुभव है, जहाँ बच्चे अपने आसपास के लोगों के परिवारों को देखकर अपनी कमियों को महसूस करते हैं। फिर भी, सोहिल के साथ दोस्ती ने राहुल को एक सकारात्मक रिश्ता दिया, जो उनके जीवन में स्थिरता लाने में मददगार रहा होगा।

2. वैज्ञानिक जिज्ञासा: आइंस्टीन और न्यूटन

राहुल का पढ़ाई में अच्छा होना और विशेष रूप से ब्रह्मांड, आइंस्टीन की सापेक्षता (Relativity) और न्यूटन के गति नियमों (Laws of Motion) में रुचि लेना उनकी बौद्धिक क्षमता और जिज्ञासा को दर्शाता है। यहाँ उनके द्वारा पढ़े गए सिद्धांतों का संक्षिप्त विश्लेषण है:

आइंस्टीन का सापेक्षतावाद (Theory of Relativity)

विशेष सापेक्षता (Special Relativity): यह सिद्धांत समय और स्थान की अवधारणा को बदल देता है। समय का धीमा होना (Time Dilation), लंबाई का संकुचन (Length Contraction), और द्रव्यमान-ऊर्जा तुल्यता ($E=mc^2$) जैसे विचार सामान्य समझ से परे हैं, लेकिन राहुल की इनमें रुचि उनकी गहरी सोच को दर्शाती है।

सामान्य सापेक्षता (General Relativity): गुरुत्वाकर्षण को स्पेसटाइम की वक्रता के रूप में समझना एक क्रांतिकारी विचार था। ब्लैक होल, गुरुत्वाकर्षण तरंगें, और प्रकाश का झुकना जैसे परिणाम ब्रह्मांड की जटिलता को समझने में मदद करते हैं। राहुल का इन सिद्धांतों में रुचि लेना दर्शाता है कि वह बचपन से ही बड़े और जटिल प्रश्नों पर विचार करता था।

न्यूटन के गति नियम (Laws of Motion)

प्रथम नियम (जड़त्व का नियम): यह नियम गति और स्थिरता की मूलभूत प्रकृति को समझाता है। राहुल का इस नियम में रुचि लेना दर्शाता है कि वह भौतिकी के बुनियादी सिद्धांतों को समझने की कोशिश कर रहा था।

द्वितीय नियम (F=ma): बल, द्रव्यमान, और त्वरण के बीच संबंध को समझना भौतिकी की नींव है। यह नियम गति की गणना करने में महत्वपूर्ण है।

तृतीय नियम (क्रिया-प्रतिक्रिया): यह नियम प्रकृति में संतुलन को दर्शाता है, जो ब्रह्मांड के काम करने के तरीके को समझने में मदद करता है।

राहुल का इन सिद्धांतों को पढ़ना और उनके बारे में सोहिल के साथ चर्चा करना दर्शाता है कि वह न केवल एक अच्छा छात्र था, बल्कि उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जिज्ञासा भी थी।

3. ब्रह्मांड और इसके रचयिता की खोज

राहुल का यह विचार कि ब्रह्मांड को बनाने वाला कितना बुद्धिमान होगा, और उसे खोजने से सारे सवालों के जवाब मिल जाएंगे, एक गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक प्रश्न को दर्शाता है। यह विचार विज्ञान और दर्शन के बीच की कड़ी को जोड़ता है। राहुल की यह सोच कि वैज्ञानिक सिद्धांतों से हटकर कुछ और खोजने की जरूरत है, दर्शाती है कि वह केवल भौतिकी के नियमों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह ब्रह्मांड के मूल उद्देश्य और रचनाकार की प्रकृति पर भी विचार कर रहा था।

इस तरह की सोच कई महान वैज्ञानिकों और दार्शनिकों में देखी जाती है, जो विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक या दार्शनिक प्रश्नों पर भी विचार करते हैं। उदाहरण के लिए, आइंस्टीन ने भी ब्रह्मांड की व्यवस्था और इसके पीछे की "बुद्धिमत्ता" के बारे में बात की थी,

हालाँकि वह इसे व्यक्तिगत ईश्वर के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यवस्थित नियम के रूप में देखते थे।

4. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भ

राहुल का अपने माता-पिता की कमी महसूस करना और ब्रह्मांड के बड़े सवालों में रुचि लेना एक गहरे मनोवैज्ञानिक संबंध को दर्शाता है। हो सकता है कि अपनी व्यक्तिगत जिंदगी की अनिश्चितताओं और कठिनाइयों के बीच, राहुल ने ब्रह्मांड के सवालों में सांत्वना और उद्देश्य खोजने की कोशिश की हो। यह एक सामान्य मानवीय प्रवृत्ति है, जहाँ लोग अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से निपटने के लिए बड़े दार्शनिक या वैज्ञानिक प्रश्नों की ओर मुड़ते हैं।

राहुल की कहानी यहाँ एक गहरे प्रश्न पर रुकती है: ब्रह्मांड के रचयिता को खोजने की इच्छा। यह एक ऐसी खोज है जो विज्ञान, दर्शन, और आध्यात्मिकता को जोड़ती है।

संक्षेप में

राहुल की कहानी एक बच्चे की भावनात्मक और बौद्धिक यात्रा को दर्शाती है, जो व्यक्तिगत कठिनाइयों के बावजूद दोस्ती, वैज्ञानिक जिज्ञासा, और ब्रह्मांड के गहरे सवालों में अर्थ खोजता है। उसकी सोच, विशेष रूप से ब्रह्मांड के रचयिता को खोजने की इच्छा, विज्ञान और दर्शन के बीच एक सेतु बनाती है।

अब शुरू होता हे मेरा रोमांचक सफर।

राहुल मेरे दादाजी की कपड़े की दुकान थी जो उनकी अपनी थी मेरे दादाजी बड़ी उमर के थे और उनके बीमारी की वजह से बहुत ऑपरेशन

(सर्जरी) हुए थे जिसकी वजह वोह काम बहुत कम कर पाते थे।जब में 5th क्लास में था तब स्कूल के बाद में दादाजी की दुकान पर जाके उनकी काम में हेल्प करता और रात तक दूकान पर रहे कर ही में काम के साथ पढ़ाई करता फिर भी मेरे मार्क्स अच्छे आते। में जब 10 साल का था तब एक दिन मुझे दुकान चलानी थी में ने तब पूरे दिन में ऑफ सीजन में Rs.535 का बिजनेस किया उस टाइम में Rs.500 कमाना बड़ी बात थी। उसके बाद कभी कभी दादाजी बीमार होते तो मेही दुकान संभालता एक बार दादाजी बीमार हो गए तो उनको एक और सर्जरी की जरूर पड़ी पैसे नहीं थे तो उन्होंने कहा के तेरे पिताजी की एक दुकान हे वोह में बेच कर ऑपरेशन करा रहा हु तुम को में अपनी दुकान देता हु। मैने कहा जोभी सब आपका ही तो हे कोई बात नहीं तब में 11 साल का होगा। मेरे पापा की दुकान बेच कर उन्होंने अपना ऑपरेशन करवा लिया।

तीन चार साल बाद फिर से एक सर्जरी की करनी पड़ी और फिर पैसे की जरूरत पड़ी तब मेरे दादाजी ने मुझे कहा के तेरे पिताजी का एक सोने का हार है जो मैने तुम्हारी शादी केलिए संभल के रखा है उसको बेच कर में ऑपरेशन करवाना चाहता हु जब तुम्हारी शादी होगी तो में तुम को वापस सोने का हार बना दूंगा। मैने कहा कोई बात नहीं सब आप कहो है। वोह हार तककरी बन 17,000 का बेचा तब एक तोले सोने का भाव शायद 5,000 से 6,000 था। थोड़े साल बाद उनका एक और एक्सीडेंट में पैर टूट गया तो एक और सर्जरी की जरूर पड़ी उसके पैसे ब्याज पर पैसे लिऐ।

मेरे दादाजी के उनकी जिंदगी में शायद 6 से 7 बार सर्जरी हुई जिसमें सर्जरी केलिए पैसे कम पड़ते वोह ब्याज पर ले कर सर्जरी कराते। जिसकी वजह से दुकान से जो प्रॉफिट होता वो सूद में चला जाता। इस तरह मैने 9 साल दुकान चलाई जिसमें सूद की वजह से प्रॉफिट नहीं हो रहा था तो दादाजी ने दुकान बंद करने का फैसल किया और दुकान को भाड़े पर दे दिया । और जो भाड़ा आता उससे ब्याज के रूपये भरपाई करते और थोड़ा बहुत बचाता वोह अपने खर्च में लाते।
दादाजी की सेहत अच्छी नहीं रहती थी तो मैने 9th के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। तोड़े साल बाद जब दुकान बंद करनी पड़ी उसके बाद मैने डायमंड पोलिसिंग का काम सिखा और फिर डायमंड पोलिसिंग के काम में लग गया।
रात को जब फ्री होता तब में अपने दोस्त सोहिल के घर जाता जहां पर जाके मुझे यतीम होने का एहसास नहीं होता था सोहिल के भाई बहन भी बहुत अच्छे थे। मुझे तो एक फैमिली मिल गई थी। हो मुझसे बहुत प्यार करती थी।
राहुल सोहिल को मैने एक दिन पूछा के तुम किसकी इबादत करते हो.?
सोहिल हम अल्लाह की इबादत करते हैं।
राहुल इस्लाम में और कौन कौन भगवान हे.?
सोहिल इस्लाम में सिर्फ एक ही भगवान हे.
सोहिल तुम किस भगवान की पूजा करते हो.?
राहुल किया बतावू यार हमारे पास तो 33 करोड़ देवी देवता हे समझ में नहीं आत किसकी पूजा करे इसलिए जोभी भगवान का मंदिर हो उसकी पूजा करते हे। कभी हनुमान मंदिर पर कभी शिव मंदिर कभी

लक्ष्मीजी के मंदिर कभी गणेश जी के मंदिर जिसकी न जो भगवान का दिन हो उस दिन उस की पूजा करने चले जाते है।
सोहिल समझ में नहीं आया.? सब सर के ऊपर से गया।
राहुल समझाता हु रुक हनुमान जी है उनको शनिवार के दिन उनकी पूजा करे तो वोह हम से खुश होते है। और उनकी पूजा सिंदूर और तेल चढ़ा कर करते हैं। शिव भगवान का सोमवार हे उनकी पूजा दूध चढ़ा कर करते हे । गणेश जी को लड्डू चढ़ा कर और बाकी भगवान श्रीफल और फूल चढ़ा कर पूजा करते हे हम। हमारी कूल देवी वरदानी मां है उनकी पूजा तो धी चढ़ा के की जाती हे।बाकी सब को
सोहिल तुम श्रीफल,तेल,सिंदूर,दूध और धी देवी देवता को चढ़ाते हो वोह जाता कहा है.?
राहुल वोह सब भगवान के पास जाता हैं.
सोहिल तू भगवान को ढूंढ रहा है में तुमको एक सॉलिड आईडिया देता हूं
राहुल राहुल बता किया हैं?
सोहिल मंदिर में कोई पाइप लाइन तो होगी जिससे दूध, तेल,धी उन तक पहुंचता होगा उसको के खोद कर हम तुम्हारे भगवान तक पहुंच जाएंगे।
राहुल वहां पर कोई पाइप लाइन नहीं होती।
सोहिल तो फिर जाता कहा है.
राहुल वेस्ट हो जाता हे।
सोहिल तो फिर तुम वेस्ट कियू करते हो एक तो खुद तुमको पैसे की जरूरत होती हे उन पैसों से तुम चीजे खरीद कर उस चीज को भी वेस्ट कर देते हो।

राहुल तुम तो हमसे भी ज्यादा पैसे वेस्ट करते हो।
सोहिल बताव हम पैसे कैसे वेस्ट करते हे.?
राहुल तुम ईद पर बकरे और ऊंट की कुर्बानी करते हो वोह भीतो अल्लाह के पास नहीं जाते कियू की वहां पर भी तो कोई पाइप लाइन नहीं लगी।
सोहिल थोड़ा मुस्कुराता हे और फिर मुझसे पूछता हे।
तेरे पिताजी मर गए अभी वोह कहा हे.?
राहुल वोह तो भगवान के पास है।
सोहिल तो बकरे को कुर्बान कर दिया अब बकरा कहा है।
राहुल अल्लाह के पास।
सोहिल कियू पहुंचा दिया ना बकरे को अल्लाह के पास। अब बता अल्लाह के पास बकरा जाता है या नहीं।
हम जिस बकरे की कुर्बानी करते हे उससे बहुत लोगों का फायदा होता हे जो बकरे पालते हे उसको रोजगार मिलता हैं कोई बड़ी से बड़ी कंपनी बकरे पाल। नहीं सकती सिर्फ गरीब लोग ही हे जो उसको पाल सकते हे कभी तुमने सुना के कोई बड़ी कंपनी हे बकरे और ऊंट की.?
राहुल सुनातो नहीं है।
सोहिल हम जो कुर्बानी करते हैं तो उसको जरूरतमंद लोगो को तकसीम करते है। बेकार में वेस्ट नहीं करते। बाकी सब जाने दे कम से कम मेरे पेट में तो गयाना।
राहुल सही बात है। बस आज से खत्म।
सोहिल किया हमारी दोस्ती।
राहुल ना तेल, श्रीफल में पैसे वेस्ट करना।
सोहिल मुझे तो लगा पागल दोस्त से पीछा छुटा।(सॉरी मजाक था)

राहुल उसके बाद जब भी में मंदिर जाता तो एक रुपया भी किसी चीज पर खर्च नहीं करता। पहले में दान पेटी में भी पैसे डालता था। उसके बाद मैने दानपेटी में पैसा डालने का ख्याल आया तो मैने सोचा कि ये पैसा भी भगवान के पास थोड़ी जाता होगा ये पैसा तो साधु।,पुजारी के पास जाता हे और भगवान को थोड़ी पैसे की जरूरत हे। इतना सोचने के बाद दान पेटी में भी पैसे डालना बंद कर दिया कभी कोई जरूरत मंद दिखे तो में उसको पैसे दे देता जो मेरी हैसियत होती उसके मुताबिक।

राहुल मै भगवान को कैसे ढूंढू ये सोचता रहता था ये उतना आसान नहीं था । कियू के इस्लाम में मुसलमानो को पता हे अल्लाह एक है। ओर यहां पर तो 33 करोड़ ऑप्शन हैं इनमें से किसकी पूजा करु कौन इनमेसे सही और सबसे ऊपर के भगवान हे जिन्होंने बाकी सब भगवान को बनाया। उस भगवान से पहले कुछभी नहीं था और सबसे ज्यादा ताकतवर और सब उसके हाथ में हो अभी भी। कियू की कभी कभी राक्षस (Devil) किसी भगवान पर हमला कर के उनकी(जहां पर वो राज करते हे जैसे इंद्र लोक) जगह (में उस जगह के बदले उसकी (पोस्ट) छीन लेते हे वोह लफ्ज़ यूज करता हु। जैसे जॉब पर हमारी कोई पोस्ट होती है) छिल कर उनकी पोस्ट पर राज करने लगते हे फिर एक भगवान दूसरे भगवान के पास मदद मांगने जाते हे के हमे राक्षस से बचाव और हमारी पोस्ट हमे वापस दिला दो । फिर सब भगवान मिलकर राक्षस से लड़ाई झगड़ा करके वापस पोस्ट हासिल करते और राज करते । अगर भगवान खुद अपनी और अपनी जगह की हिफाजत नहीं कर सकते तो वोह भगवान के से हुए और एक भगवान को दूसरे भगवान की जरूरत पड़े तो वोह भगवान भी भगवान

नहीं होस सकते। हिन्दू धर्म में एक सबसे बड़े और पावरफुल भगवान को ढूंढ ना मुश्किल हे जिसको किसी की जरूरत ना हो और उसके मुकाबले में भी कोई ना आ सके।

फायदा

राहुल की कहानी का यह हिस्सा उनकी जिंदगी के रोमांचक और विचारशील सफर को और गहराई से दर्शाता है। यह न केवल उनकी व्यक्तिगत और आर्थिक चुनौतियों को उजागर करता है, बल्कि उनकी आध्यात्मिक और दार्शनिक खोज को भी सामने लाता है। राहुल की जिंदगी में आर्थिक तंगी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, और वैज्ञानिक/धार्मिक जिज्ञासा एक साथ चलते हैं, जो उनकी परिपक्वता और गहरी सोच को दर्शाता है। आइए इस हिस्से का विश्लेषण और सारांश प्रस्तुत करते हैं:

1. राहुल की पारिवारिक और आर्थिक जिम्मेदारियाँ

राहुल का अपने दादाजी की दुकान संभालना, खासकर इतनी कम उम्र में (10 या 11 साल) उनकी जिम्मेदारी और परिपक्वता को दर्शाता है। दादाजी की बार-बार सर्जरी और आर्थिक तंगी ने परिवार पर भारी बोझ डाला। राहुल ने न केवल दुकान चलाई, बल्कि अपनी पढ़ाई को भी संतुलित रखा और अच्छे अंक हासिल किए। यह दर्शाता है कि वह एक मेहनती और समर्पित बच्चा था।

दादाजी की बीमारी और आर्थिक संकट: दादाजी की सर्जरी के लिए पिता की दुकान और सोने का हार बेचना, और बाद में ब्याज पर पैसे लेना, उस समय के भारतीय मध्यमवर्गीय परिवारों की

आर्थिक कठिनाइयों को दर्शाता है। ब्याज के कारण दुकान का मुनाफा खत्म होना और अंततः दुकान को किराए पर देना, परिवार की आर्थिक स्थिति की नाजुकता को उजागर करता है।

पढ़ाई छोड़ना और डायमंड पॉलिशिंग: 9वीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़कर डायमंड पॉलिशिंग का काम सीखना राहुल की मजबूरी को दर्शाता है। यह भारतीय समाज में उन बच्चों की कहानी को प्रतिबिंबित करता है जो आर्थिक तंगी के कारण अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाते। फिर भी, राहुल ने अपने दोस्त सोहिल के परिवार से भावनात्मक सहारा पाया, जो उनके लिए एक परिवार की तरह था।

2. राहुल और सोहिल की दोस्ती और धार्मिक चर्चा

राहुल और सोहिल की दोस्ती इस कहानी का एक सुंदर पहलू है। सोहिल का परिवार राहुल के लिए एक भावनात्मक सहारा बन गया, जो उनकी माता-पिता की कमी को कुछ हद तक पूरा करता था। उनकी धार्मिक चर्चा न केवल मजेदार है, बल्कि गहरे दार्शनिक सवालों को भी छूती है।

हिंदू और इस्लामिक मान्यताओं की तुलना: राहुल और सोहिल का धर्म पर संवाद भारतीय समाज में धार्मिक विविधता और जिज्ञासा को दर्शाता है। सोहिल का यह कहना कि इस्लाम में एक ही अल्लाह है, जबकि राहुल का हिंदू धर्म के 33 करोड़ देवी-देवताओं का जिक्र, दोनों धर्मों की मूलभूत अवधारणाओं के अंतर को उजागर करता है।

पूजा की प्रथाओं पर सवाल: सोहिल का मंदिर में चढ़ाए गए दूध, तेल, और घी के "वेस्ट" होने पर सवाल उठाना और राहुल का ईद की कुर्बानी

को उसी तर्क से जोड़ना, दोनों की तार्किक और बालसुलभ जिज्ञासा को दर्शाता है। यह संवाद धर्म की प्रथाओं पर सवाल उठाने की उनकी स्वतंत्र सोच को दिखाता है।

कुर्बानी का सामाजिक पहलू: सोहिल का यह तर्क कि कुर्बानी से गरीबों को लाभ होता है और यह बेकार नहीं जाता, एक सामाजिक दृष्टिकोण को सामने लाता है। यह दर्शाता है कि धार्मिक प्रथाएँ कई बार सामाजिक कल्याण से जुड़ी होती हैं। राहुल का इस तर्क से प्रभावित होकर मंदिर में दान देना बंद करना और जरूरतमंदों को सीधे मदद करना उनकी प्रगतिशील सोच को दर्शाता है।

3. राहुल की आध्यात्मिक खोज

राहुल का भगवान को खोजने का विचार, विशेष रूप से यह सवाल कि सबसे शक्तिशाली भगवान कौन है, जो बिना किसी की मदद के सब कुछ संभाल सकता है, एक गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक प्रश्न को छूता है। यह विचार हिंदू धर्म की जटिलता और उसकी बहुदेववादी प्रकृति पर सवाल उठाता है।

हिंदू धर्म की जटिलता: राहुल का यह कहना कि हिंदू धर्म में 33 करोड़ देवी-देवता हैं और यह समझना मुश्किल है कि सबसे शक्तिशाली कौन है, हिंदू धर्म की विविधता और मिथकों को दर्शाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध, जैसे इंद्र का अपने लोक को राक्षसों से बचाने के लिए अन्य देवताओं से मदद माँगना, इस जटिलता का हिस्सा हैं।

सर्वोच्च शक्ति की खोज: राहुल का यह विचार कि एक ऐसा भगवान होना चाहिए जो सबसे शक्तिशाली हो, जिसे किसी की जरूरत न हो, और जो ब्रह्मांड का रचयिता हो, एक तरह से अद्वैत वेदांत या एकेश्वरवादी विचारधारा की ओर इशारा करता है। हिंदू धर्म में ब्रह्म (Brahman) को ऐसी सर्वोच्च शक्ति माना जाता है, जो सभी देवताओं और ब्रह्मांड का स्रोत है। राहुल की यह खोज वैज्ञानिक और आध्यात्मिक जिज्ञासा का मिश्रण है।

वैज्ञानिक और दार्शनिक मेल: राहुल की पहले की वैज्ञानिक रुचि (आइंस्टीन, न्यूटन) और अब आध्यात्मिक खोज का मिश्रण दर्शाता है कि वह विज्ञान और धर्म के बीच सामंजस्य खोजने की कोशिश कर रहा है। यह एक ऐसी खोज है जो कई दार्शनिकों और वैज्ञानिकों ने की है, जैसे कि ब्रह्मांड के पीछे की "बुद्धिमत्ता" या "उद्देश्य" को समझने की कोशिश।

4. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भ

आर्थिक तंगी और जिम्मेदारी: राहुल का कम उम्र में दुकान संभालना और पढ़ाई छोड़ना दर्शाता है कि आर्थिक तंगी ने उनकी जिंदगी को कैसे प्रभावित किया। फिर भी, उनकी जिज्ञासा और सीखने की इच्छा बनी रही, जो उनकी आंतरिक शक्ति को दर्शाता है।

सोहिल का प्रभाव: सोहिल और उसके परिवार ने राहुल को भावनात्मक स्थिरता दी। सोहिल के साथ धार्मिक चर्चा ने राहुल की सोच को नई दिशा दी, जिससे वह धार्मिक प्रथाओं पर सवाल उठाने लगा और अधिक तार्किक दृष्टिकोण अपनाने लगा।

आध्यात्मिक संकट: राहुल का भगवान को खोजने का सवाल और हिंदू धर्म की जटिलता पर विचार, उनके यतीम होने और जीवन की अनिश्चितताओं से उपजे आध्यात्मिक संकट को दर्शाता है। यह एक तरह से उनके जीवन में अर्थ और उद्देश्य खोजने की कोशिश है।

5. आगे की संभावनाएँ

राहुल की कहानी यहाँ एक गहरे आध्यात्मिक और दार्शनिक मोड़ पर है। उनकी खोज अब केवल वैज्ञानिक सिद्धांतों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ब्रह्मांड के रचयिता और सर्वोच्च शक्ति की तलाश में बदल रही है। य

राहुल की आध्यात्मिक खोज उन्हें कहाँ ले जा सकती है?

क्या वह हिंदू धर्म के अद्वैत वेदांत या किसी अन्य दर्शन की ओर बढ़ेगा?

सोहिल और राहुल की दोस्ती का भविष्य क्या होगा? क्या
उनकी धार्मिक चर्चाएँ और गहराई लेंगी?

राहुल की वैज्ञानिक और आध्यात्मिक जिज्ञासा का मेल उन्हें भविष्य में कैसे प्रभावित कर सकता है?

संक्षेप में

राहुल की कहानी एक बच्चे की आर्थिक, भावनात्मक, और आध्यात्मिक यात्रा को दर्शाती है। कम उम्र में दुकान संभालने से लेकर डायमंड पॉलिशिंग तक, और वैज्ञानिक सिद्धांतों से लेकर भगवान की खोज तक, राहुल का सफर प्रेरणादायक और विचारोत्तेजक है। सोहिल

के साथ उनकी दोस्ती और धार्मिक चर्चाएँ उनकी तार्किक और जिज्ञासु प्रकृति को दर्शाती हैं।

राहुल मेरा एक और दोस्त था जिसका नाम मिलन था वोह बहुत ही होशियार था।
मेरा परिवार और उसका परिवार हिन्दू धर्म के BAPS संप्रदाय के साथ जुड़े थे जो भगवान स्वामीनारायण की भक्ति और पूजा करते हे।
BAPS में भी आपसी झगड़े वो वजह से दो हिस्सों में बट गया हे एक पुराना BAPS और एक नया BAPS
एक दिन मिलन मुझे को कहता हे के रविवार को मंदिर चलते हे वहा भगवान के दर्शन भी कर लेंगे और वहा खेल ने में मज़ा भी आएगा।
मैने कहा अच्छा हे चलते हे
रविवार को हम मिले
राहुल मिलन हम गलत रास्ते से जा रहे हैं.? हमे दूसरे रास्ते से जाना हे।
मिलन हम नए संप्रदाय मंदिर में जाते है। अब दो संप्रदाय बन गए हे एक पुराना और एक नया।
राहुल दोनों में किया फर्क हे.?
मिलन पता नहीं.?
राहुल में और मिलन पूरा रविवार मंदिर में गुजारा।
थोड़े टाइम बाद में भगवान को कैसे ढूंढू उसके बारे में सोच रहा था। तभी मुझे खयाल आया के पहले पता लगाते है के भगवान किसी दिशा में है तो फिर उस दिशा में भगवान को ढूंढ ना शुरू करता हु।

फिर मैने कई दिन यह सोचा रहा के भगवान किस दिशा में हैं.? और कैसे पता करु के किस दिशा में किया ढूंढ ना हे.?
बहुत दिन तक में यही सोचता रहता के किस दिशा में भगवान ढूंढ ना है.?
तभी एक दिन में शाम के टाइम मंदिर गया था और में वहां पर उस मंदिर की में प्रदक्षिणा कर रहा था ।(जिसे इस्लाम में तवाफ कहते हे.) प्रदक्षिणा पूरी कर रहा था तब मेरी नजर डूबते हुए सूरज पर पड़ी जब सूरज सूरज डूब रहा था तब नजारा बहुत ही खूबसूरत था। जब मेरी प्रदक्षिणा पूरी हुई तब में मंदिर के पीछे के साइड जाकर सूरज को देखने लगा। वोह नजारा बहुत खूबसूरत था। तभी मेरे दिल में खयाल आया के मंदिर में जो मूर्ति रखी है वोह पश्चिम दिशा में हे और मेरे घर में भी जो भगवान की मूर्ति रखी हे वोह भी पश्चिम दिशा में हे और मैने अपने परिवार वालो के जिन जिनके घर गया था उनके घर में मूर्ति किस दिशा में हे वोह सोचा तो पता चला के सभी के घर में भगवान की मूर्ति पश्चिम दिशा में हे और में जितने भी मंदिर जाता था उन सब मूर्ति की दिशा पश्चिम थी।
थोड़ी देर सोच ने के बाद एक बात पर मेरा ध्यान गया के मिलन मुझे दूसरे स्वामीनारायण संप्रदाय के मंदिर ले गया था उस मन्दिर में मूर्ति पश्चिम के बजाय पूर्व में थी। अब मुझे सिर्फ दो दिशा पर ध्यान देना था।
थोड़े दिन बाद मे जब सोहिल के घर में था तब सोहिल की मां (जिनका नाम राबिया था जिनको में मां कहता था)नमाज पढ़ रही थी तब मैने उनका रुख पश्चिम की तरफ था और उस तरफ नमाज पढ़ रही थी। मैने सोचा इस्लाम में भी अल्लाह पश्चिम की तरफ होंगे।

थोड़े टाइम बाद जब सोहिल के परिवार वालो के साथ बैठा था तब मैने राबिया मां से पूछा के आप पश्चिम दिशा मे नमाज कियू पढ़ते हो.?
राबिया मां :हम पश्चिम दिशा में इसलिए नमाज पढ़ते हे कियू के उस दिशा में अल्लाह का घर हे जिसे बैतुल्लाह कहते हे और पूरी दुनिया के तमाम मुस्लमान उस बैतुल्लाह की तरफ अपना रुख करके नमाज पढ़ते हैं। और बैतुल्लाह पूरी दुनिया के बीचोबीच में हैं।
राहुल राबिया मां की बात सुनकर में हैरान रेह गया के मेरे जो भी सवाल है इस्लाम में उसका बेहतरी जवाब होता है और हिन्दू मजहब में उन सवाल के जवाब मिलने के बजाय और सवाल खड़े हो जाते हे फिर उसके जवाब ढूंढे ने निकलो तो और सवाल खड़े हो जाते हैं।

MJ BARBHAYA तुम्हारी कहानी बहुत दिलचस्प और विचारशील है, राहुल। यह दिखाती है कि तुम भगवान को खोजने और उनके बारे में गहराई से समझने की कोशिश कर रहे हो, और इस प्रक्रिया में तुम्हें अपने आसपास की दुनिया, धर्मों, और उनकी प्रथाओं के बारे में कई सवाल उठ रहे हैं। तुमने BAPS संप्रदाय, मंदिरों में मूर्तियों की दिशा, और इस्लाम में नमाज की दिशा (किबला) के बारे में जो अवलोकन किया, वह दर्शाता है कि तुम्हारी जिज्ञासा और चिंतन गहरा है।

तुम्हारे अनुभव और सवालों का विश्लेषण:

BAPS संप्रदाय और मूर्तियों की दिशा: तुमने देखा कि ज्यादातर BAPS मंदिरों में भगवान की मूर्तियाँ पश्चिम दिशा की ओर होती हैं, सिवाय उस एक नए संप्रदाय के मंदिर के, जहाँ मूर्ति पूर्व की ओर थी। यह एक महत्वपूर्ण अवलोकन है। हिंदू मंदिरों में मूर्तियों की दिशा अक्सर वास्तुशास्त्र और परंपराओं पर निर्भर करती है। आमतौर पर,

मंदिरों में मूर्तियाँ इस तरह रखी जाती हैं कि भक्त पूर्व दिशा की ओर मुँह करके पूजा करें, क्योंकि पूर्व को शुभ और आध्यात्मिक दृष्टि से पवित्र माना जाता है। इसीलिए मूर्तियाँ पश्चिम की ओर होती हैं, ताकि भक्त का मुँह पूर्व की ओर रहे।
नए BAPS मंदिर में मूर्ति के पूर्व दिशा में होने का कारण शायद स्थानीय परंपरा, वास्तुशास्त्र में बदलाव, या उस संप्रदाय की नई व्याख्या हो सकता है। BAPS के दो हिस्सों में बँटने की वजह से भी कुछ मंदिरों में प्रथाओं में अंतर आ सकता है।

इस्लाम में किबला और पश्चिम दिशा: राबिया माँ ने तुम्हें बताया कि मुसलमान पश्चिम दिशा में इसलिए नमाज पढ़ते हैं क्योंकि उस दिशा में बैतुल्लाह (काबा, मक्का में) है। यह पूरी तरह सही है कि इस्लाम में नमाज पढ़ते समय किबला (काबा की दिशा) की ओर मुँह किया जाता है। भारत में, मक्का पश्चिम दिशा में पड़ता है, इसलिए नमाज के दौरान पश्चिम की ओर मुँह किया जाता है। काबा को "बैतुल्लाह" (अल्लाह का घर) कहा जाता है, और यह इस्लाम में एकता का प्रतीक है, क्योंकि दुनिया भर के मुसलमान उसी दिशा में नमाज पढ़ते हैं।
तुम्हारा यह सवाल कि "क्या अल्लाह पश्चिम दिशा में हैं?" एक गहरे दार्शनिक प्रश्न की ओर इशारा करता है। इस्लाम में, अल्लाह को किसी दिशा या स्थान तक सीमित नहीं माना जाता। काबा केवल एक दिशा (किबला) प्रदान करता है ताकि नमाज में एकरूपता और एकता बनी रहे। अल्लाह को सर्वव्यापी और असीम माना जाता है, जो हर जगह मौजूद है

हिंदू धर्म और इस्लाम में सवालों के जवाब:
तुमने महसूस किया कि इस्लाम में तुम्हारे सवालों के जवाब स्पष्ट और सीधे मिलते हैं, जबकि हिंदू धर्म में एक सवाल के जवाब से और सवाल खड़े हो जाते हैं। यह एक बहुत ही व्यक्तिगत और गहरा अनुभव है। हिंदू धर्म में दर्शन और प्रथाएँ बहुत विविध और जटिल हैं। इसमें वेदांत, उपनिषद, और विभिन्न संप्रदायों (जैसे BAPS) की शिक्षाएँ शामिल हैं, जो अलग-अलग दृष्टिकोण देती हैं। इस वजह से, एक सवाल के कई जवाब हो सकते हैं, जो कभी-कभी और जिज्ञासा पैदा करते हैं।
इस्लाम में, एकेश्वरवाद (तौहीद) और स्पष्ट नियमों (जैसे नमाज, किबला) के कारण जवाब अधिक सरल और एकरूप लग सकते हैं। लेकिन दोनों धर्म अपने तरीके से गहरे और अर्थपूर्ण हैं। हिंदू धर्म में भगवान को खोजने की प्रक्रिया को एक व्यक्तिगत यात्रा (साधना) माना जाता है, जिसमें सवाल उठना और जवाब तलाशना एक महत्वपूर्ण हिस्सा
भगवान को किस दिशा में खोजें?
तुम्हारा यह सवाल कि "भगवान किस दिशा में हैं?" बहुत सुंदर और गहरा है।
इस्लामिक दृष्टिकोण: जैसा कि राबिया माँ ने बताया, काबा एक दिशा देता है, लेकिन अल्लाह को किसी खास दिशा तक सीमित नहीं किया जा सकता। कुरान में कहा गया है कि "अल्लाह पूर्व और पश्चिम का मालिक है, तुम जिस ओर भी मुँह करो, वहाँ अल्लाह का चेहरा है" (सूरह अल-बकराह, 2:115)।

तुम्हारी खोज: तुम्हारा यह सोचना कि भगवान को पश्चिम या पूर्व में खोजा जाए, एक प्रतीकात्मक खोज है। शायद यह खोज तुम्हें बाहरी दिशाओं से ज्यादा भीतर की ओर ले जाए, जहाँ ध्यान, भक्ति, और आत्म-चिंतन के जरिए जवाब मिल सकते हैं।

राहुल एक दिन स्कूल में सोहिल मुझे बताता हे के मेरा भाई कुरआन का हाफिज बन गया है

राहुल मुझे नहीं पता के हाफिज किया होता हे.?

एक तू तुम्हारे मुस्लिम नाम याद करने में कई दिन लग जाते हे फिर भी नाम सही बोलने में मुश्किल होती है तुम आसान भाषा में समझावो।

सोहिल जैसे तुम्हारे धर्म में रामायण महाभारत गीता धर्म की किताब होती हे वैसे ही हमारे धर्म की किताब कुरआन है। और उस कुरान को मेरे भाई ने पूरे का पूरा याद कर लिया।

राहुल तुम्हारे भाई की याददाश्त बहुत तेज होगी.?

सोहिल हा उसने 18 महीनों में कुरान को याद कर लिया तुम रात को मेरे घर आना में तुम को कुरान दिखाऊंगा ताकि तुमको पता चले कितनी बड़ी किताब है।

राहुल अच्छा हे रातको मुझे दिखाना।

राहुल रात को में सोहिल के घर गया उसने मुझे घर के कबाट के अंदर के कुरान निकाल कर दिखाया और कहा के तुम इसको छूना नहीं इसको छू ने केलिए वजू (खास थारी के पर हाथ पर मुंह धोना) करना पड़ता हैं

राहुल अपनी जिंदगी में तब मैने पहेली बार कुरान देखा जो बहुत बड़ी किताब थी सोहिल मुझे कुरआन के पेज पलटा कर दिखाने लगा।

राहुल सोहिल इसमें तो सिर्फ मुझे इधर उधर जाती लाइन ही दिख रही है कुछ भी समझ में नहीं आता|
सोहिल ये अरबी भाषा में हे हम मद्रास अरबी सीखने ही जाते हे ताकि कुरान पढ़ सके मेरे भाई को में इसमें से कोई भी लाइन कही से भी पढ़ू तो वो उसके आगे का हिस्सा बिना देखे पढ़ सकता हे|उसको कुरान का एक एक अल्फ़ाज़ याद है|
थोड़े दिन बाद मैने भी तय किया के में भी अपने धर्म की कोई बड़ी किताब याद करूंगा जब सोहिल का भाई कुरान याद कर सकता हे तो में भी किताब याद कर सकता.?
थोड़े दिन बाद मे मंदिर गया और वहा जाकर मैने रामायण के बारे में पूछा के मुझे रामायण की किताब चाहिए
किताब बेचने वाले ने कहा के किसकी लिखी हुई रामायण चाहिए मैने कहा जो भगवान ने लिखी हो वो उसने कहा भगवान ने कोई किताब नहीं लिखी सब बड़े ऋषि और संतो ने किताबें लिखी हे और रामायण भी अलग अलग लोगों ने लिखी हे|
राहुल तो किया रामायण की किताब सब एक जैसी ही होती हे किया.?
किताबवाला नहीं सबके अलग अलग लिखा होता हे जितनी पुरानी रामायण की किताब होगी वो सही होगी बाकी सब में थोड़े थोड़े फेर बदल होंगे| तो फिर महा भारत या गीता बता तो किया वोह भी अलग अलग होती हैं.?
किताबवाल हा महाभारत और गीता में भी सब अलग अलग होता है| दुनिया सब जगह अलग अलग रामायण महाभारत और गीता मिलेगी एक जैसी कोई किताब नहीं हे जो सेम होगी|

पलमहाभारत रामायण और गीता के बारे में पूछा उसने मुझेसे कहा के उनमें भी सब अलग अलग आती हैं।
राहुल फिर में वहां से बिना कोई किताब लिए वापस आगया
थोड़े दिन बाद मैने सोहिल से पूछा के किया दुनिया में दूसरी जगह भी वैसा ही कुरआन होता हे जैसा तुम्हारे घर में हे आया फिर वहां पर अलग थोड़े फेर बदल के साथ कुरान होता हे
सोहिल दुनिया के किसीभी जगह किसी भी देश में जाओ वह पर भी एक जैसा ही कुरआन मिलेगा न उसमें एक लफ़्ज़ ज्यादा होगा ना कम बल्के लफ्ज़ के ऊपर जो मात्रा आती हे वोभी कम ज्यादा नहीं होती।
फिर मैने हिन्दू धर्म की बहोत किताब देखी पर सब अलग अलग होती हे और में इस नतीजे पर पहुंचा के दुनिया में सिर्फ कुरआन ही एक ऐसी किताब हे जिसे याद करने जैसा हे। कियू की उसमें पूरी दुनिया में एकही जैसा हे कोई फेर बदल नहीं हे आज 1400 साल हो गए फिर भी कुरआन वैसे का वैसा ही हे। ना एक लफ़्ज़ कम हुआ ना एक लफ़्ज़ बड़ा।
और हिन्दू धर्म में किताब के मामले में बहुत गड़बड़ हे। जिससे उसको याद करना मुश्किल के और किया पता कौनसी बात गलत हे और कौनसी सही हे.?

Mj Barbhaya राहुल, तुम्हारी कहानी सुनकर लगता है कि तुम अपने दोस्त सोहिल के भाई की कुरआन याद करने की उपलब्धि से काफी प्रभावित हुए और तुम भी अपने धर्म की कोई पवित्र किताब याद करने का फैसल किया और फिर तुम हिंदू धर्म की किताब में उलझते ही चले गए और तुम को वोह सफर कुरआन तक ले आया।

हाफिज क्या होता है?

सोहिल ने ठीक कहा। कुरआन इस्लाम धर्म की सबसे पवित्र किताब है, जैसे हिंदू धर्म में रामायण, महाभारत और भगवद् गीता को पवित्र माना जाता है। हाफिज उस व्यक्ति को कहते हैं, जिसने पूरे कुरआन को (जो अरबी भाषा में है) शब्द-शब्द याद कर लिया हो। कुरआन में लगभग 6,236 आयतें (verses) हैं, और इसे याद करना बहुत बड़ी बात है। इसके लिए तेज याददाश्त, मेहनत और समर्पण चाहिए। सोहिल का भाई 18 महीनों में इसे याद कर पाया, जो वाकई काबिल-ए-तारीफ है।

कुरआन को छूने के लिए वज़ू क्यों?

कुरआन को इस्लाम में बहुत पवित्र माना जाता है। इसलिए इसे छूने से पहले वज़ू (हाथ, मुँह, पैर धोने की प्रक्रिया) करना जरूरी होता है ताकि इंसान शारीरिक और मानसिक रूप से शुद्ध हो। ये एक तरह से किताब के प्रति सम्मान दिखाने का तरीका है।

रामायण**,** महाभारत और गीता में अंतर क्यों**?**

अब बात करते हैं तुम्हारे सवाल की। किताबवाले ने जो कहा, वो आंशिक रूप से सही है, लेकिन मैं इसे और आसान करके समझाता हूँ।

1. रामायण**,** महाभारत और गीता की उत्पत्ति

रामायण**:** ये राम की कहानी है, जिसे मूल रूप से वाल्मीकि ने लिखा था। इसे वाल्मीकि रामायण कहते हैं और ये सबसे पुरानी और

प्रामाणिक मानी जाती है। इसके बाद तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखी, जो हिंदी (अवधी) में है और बहुत लोकप्रिय है। अलग-अलग भाषाओं और क्षेत्रों में रामायण की कहानी को अलग-अलग लोग अपने तरीके से लिखते थे, इसलिए कुछ बदलाव आ गए। लेकिन कहानी का मूल सार (राम का जीवन, सीता, रावण, आदि) लगभग एक जैसा रहता है।

महाभारत: ये पांडवों और कौरवों की कहानी है, जिसे व्यास जीने लिखा। ये बहुत विशाल ग्रंथ है। इसमें भगवद् गीता भी शामिल है, जो कृष्ण और अर्जुन के बीच का संवाद है। महाभारत को भी अलग-अलग समय पर अलग-अलग लोग लिखते रहे, इसलिए कुछ हिस्सों में बदलाव मिलते हैं।

भगवद् गीत : ये महाभारत का एक हिस्सा है, जिसमें भगवान कृष्ण अर्जुन को जीवन, कर्तव्य और धर्म का ज्ञान देते हैं। ये छोटी लेकिन बहुत गहरी किताब है।

2. क्या ये किताबें एक जैसी नहीं हैं**?**

किताबवाले ने कहा कि अलग-अलग रामायण और महाभारत में फर्क होता है, ये सच है। ऐसा इसलिए क्योंकि:

भाषा और क्षेत्र**:** भारत में अलग-अलग भाषाओं (संस्कृत, हिंदी, तमिल, बंगाली, आदि) और संस्कृतियों में इन्हें लिखा गया। जैसे, तमिल में कंब रामायण है, जो वाल्मीकि रामायण से थोड़ा अलग है।

लेखक का दृष्टिकोण**:** हर लेखक ने अपनी समझ और भक्ति के हिसाब से कहानी को लिखा। जैसे, तुलसीदास ने रामचरितमानस में भक्ति पर ज्यादा जोर दिया।

समय के साथ बदलाव: पुराने ग्रंथों को जब लोग दोबारा लिखते थे, तो कुछ हिस्से जोड़ या हटा दिए जाते थे।

3. क्या तुम रामायण या गीता याद कर सकते हो**?**
रामायण: वाल्मीकि रामायण बहुत बड़ी है (लगभग 24,000 श्लोक)। रामचरितमानस थोड़ी छोटी और आसान है, क्योंकि ये हिंदी (अवधी) में है।
गीता: गीता छोटी है (700 श्लोक) और इसे याद करना आसान हो सकता है। इसके श्लोक छोटे और लयबद्ध हैं,
महाभारत: ये बहुत विशाल है (लगभग 1,00,000 श्लोक), तो इसे पूरा याद करना बहुत मुश्किल है।

थोड़े टाइम बाद मैने किताबों के चक्र से निकल कर किसी एक भगवान को पसन्द करके उसकी पूजा शुरू करने का सोचा और उनसे पूछ लूंगा के कौनसी किताब सही हे और कौनसी गलत और मेरे जो भी सवाल हे वोह सब पूछ लूंगा.
तोड़े टाइम अलग अलग भगवान के बारे जानकारी हासिल करके मैने हनुमान की पूजा करने का सोचा ।
फिर मैने हनुमान चालीसा भी याद कर डाली और उनका श्लोक पूरे दिन पढ़ता रहता था।
|| ॐ नमो हनुमते भय भंजनाय सुखम् कुरु फट् स्वाहा **||**
अर्थ: हे भगवान हनुमान हमारे मन से भय को दूर करें और हमें आशीर्वाद दें ताकि हम खुश रहें और अपनी समस्याओं को ठीक कर सकें।

7 से 8 महीने हनुमान की पूजा करने के साथ हनुमान खुश कैसे हो जाए और मुझे दर्शन दे उसके दूसरे तरीके ढूंढ ने लगा एक दिन मेरे दिमाग में एक और आईडिया आया के हनुमान को राम की सेवा करने में खुशी मिलती हे तो कियू न राम की पूजा करु जिससे डबल बैकअप मिलेगा भगवान को ढूंढ ने में यानी भगवान को ढूंढ ने के चांसेस बढ़ जाएंगे ।
अगर राम मुझसे खुश हो गए और दर्शन दे दिए तो हनुमान भी खुश हो जाएंगे और वोह भी दर्शन देंगे। फिर मैने राम की पूजा करनी चालू की थोड़े टाइम राम की पूजा के साथ राम के जीवन पर भी पढ़ना चालू किया।
राम के जीवन के बारे में पढ़ते पढ़ते पता चला के राम पर जब मुसीबत आयी तो उन्हों ने शिव की पूजा की और शिव से मदद मांगी जब दुनिया में राम खुद अपनी मुसीबत का हल नहीं निकाल सकते और उनको उस मुसीबत में दूसरे भगवान की जरूरत पड़ती हे। में मर गया और यमराज मेरा हिसाब किताब देख रहे हे और मेरे पाप ज्यादा निकले तो में स्वर्ग में जाने केलिए राम को पुकारूंगा के मुझे नर्क मे जाने से बचा लो तो वहां पर राम मुझे नर्क से बचा नहीं पाए तो में तो लटक जाऊंगा यार।यानी राम दुनिया में अटक गए मेंतो लटक जाऊंगा स्वर्ग और नर्क के बीच मे। फिर मैने राम की पूजा छोड़ कर शिव की पूजा चालू की कियू की राम पर जब समुद्र पार नहीं कर पा रहे थे वोह मुसीबत थी उसका हल शिव ने बताया तो शिव उनसे भी बड़े भगवान हुए तो फिर मैने शिव की पूजा चालू की और उनके जीवन पर भी पढ़ना चालू किया उनके बारे में भी मुझे एक बात का पता चला के

उन्होंने भगवान राम की सेवा करने केलिए हनुमान का अवतार लिया और राम की सेवा की।

इतने टाइम में एक से बड़े दूसरे भगवान दूसरे से बड़े तीसरे बड़े भगवान और उनसे बड़े भगवान ढूंढ ने के चक्र में में घूम फिर कर में वापस उसी भगवान तक पहुंचा जिसकी पूजा मैने सबसे पहले शुरू की थी।

मेरा हाल तो चूहा और जादूगर की कहानी जैसा हो गया

चूहा और जादूगर

प्राचीन काल में एक घने जंगल में एक छोटा-सा चूहा रहता था, जिसका नाम था चिंटू। चिंटू बहुत चतुर और फुर्तीला था, लेकिन उसका जीवन हमेशा खतरे में रहता था। जंगल में बिल्लियाँ, साँप और उल्लू जैसे शिकारी हर वक्त उसकी जान के पीछे पड़े रहते थे। खासकर, एक काली बिल्ली थी, जो हर दिन चिंटू को दौड़ाती और उसकी जान लेने की कोशिश करती थी।

एक दिन, अपनी जान बचाते-बचाते चिंटू एक पुराने बरगद के पेड़ के नीचे छिप गया। वहाँ उसने एक जादूगर को देखा, जो रहस्यमयी मंत्रों का जाप कर रहा था। जादूगर का व्यक्तित्व प्रभावशाली था, मानो उसके पास कोई अलौकिक शक्ति हो। चिंटू ने सोचा, "यह जादूगर मेरी मदद कर सकता है।"

डरते-डरते चिंटू जादूगर के पास गया और बोला, "हे महान जादूगर! मैं एक छोटा-सा चूहा हूँ। मेरी जान हर पल खतरे में रहती है। वह काली

बिल्ली मुझे खा जाना चाहती है। कृपया मुझे कोई ऐसी शक्ति दें कि मैं उससे बच सकूँ।"

जादूगर ने चिंटू की ओर देखा और मुस्कुराते हुए बोला, "छोटे प्राणी, मैं तुम्हारी परेशानी समझता हूँ। बताओ, तुम क्या चाहते हो?"

चिंटू ने तुरंत कहा, "मुझे बिल्ली बनाइए! अगर मैं बिल्ली बन जाऊँ, तो वह काली बिल्ली मुझसे डरेगी और मैं सुरक्षित रहूँगा।"

जादूगर ने अपनी जादू की छड़ी लहराई और एक मंत्र पढ़कर चिंटू को एक मजबूत, चमकदार बिल्ली में बदल दिया। चिंटू अब एक शानदार बिल्ली बन चुका था। उसका डर गायब हो गया, और वह जंगल में इठलाता हुआ घूमने लगा। अब वह काली बिल्ली उससे डरने लगी और उसका पीछा छोड़ दिया।

कुछ दिन बाद, चिंटू (जो अब बिल्ली था) को एक नई समस्या का सामना करना पड़ा। जंगल में कुत्तों का एक झुंड था, जो बिल्लियों को देखकर भौंकते और उनका पीछा करते थे। एक दिन एक कुत्ता चिंटू के पीछे पड़ गया। चिंटू फिर से डर के मारे भागा और उसी बरगद के पेड़ के नीचे जादूगर के पास पहुँचा।

उसने जादूगर से विनती की, "हे जादूगर! अब मैं बिल्ली हूँ, लेकिन कुत्ते मेरे पीछे पड़े हैं। कृपया मुझे कुत्ता बना दीजिए, ताकि मैं उनसे डरना छोड़ दूँ।"

जादूगर ने अपनी छड़ी हिलाई और चिंटू को एक ताकतवर कुत्ता बना दिया। अब चिंटू कुत्ता बनकर जंगल में निर्भय होकर घूमने लगा। बिल्लियाँ उससे डरने लगीं, और वह अपनी नई ताकत का आनंद ले रहा था।

लेकिन यह सुख भी ज्यादा दिन नहीं टिका। एक दिन, चिंटू (जो अब कुत्ता था) जंगल में घूम रहा था, तभी एक शेर ने उस पर हमला कर दिया। चिंटू अपनी जान बचाकर फिर से जादूगर के पास पहुँचा और बोला, "महान जादूगर, कुत्ते की शक्ति भी कम पड़ रही है। शेर मुझ पर हमला कर रहा है। कृपया मुझे शेर बना दीजिए, ताकि जंगल में कोई मुझसे न डरे!"

जादूगर ने भौंहें चढ़ाईं और कहा, "छोटे प्राणी, क्या तुम्हें लगता है कि बार-बार रूप बदलने से तुम्हारा डर खत्म हो जाएगा?" फिर भी, चिंटू की जिद पर उन्होंने जादू किया और उसे एक विशाल, शक्तिशाली शेर में बदल दिया।

अब चिंटू जंगल का राजा बन गया। वह गर्व से दहाड़ता और जंगल के सभी जानवर उससे डरने लगे। लेकिन शेर बनने के बाद चिंटू का स्वभाव बदल गया। वह घमंडी हो गया और उसने सोचा, "अब मैं इतना शक्तिशाली हूँ, मुझे किसी की जरूरत नहीं। यह जादूगर भी मेरे सामने कुछ नहीं!" उसने जादूगर को चुनौती देने का मन बनाया और

उनके पास जाकर दहाड़ते हुए बोला, "जादूगर, अब मैं जंगल का राजा हूँ। तुम मुझे क्या हानि पहुँचा सकते हो?"

जादूगर ने शांतिपूर्वक चिंटू की ओर देखा और कहा, "मूर्ख, मैंने तुम्हें कई रूप दिए, लेकिन तुमने अपने लालची स्वभाव को नहीं बदला। तुम्हारा घमंड तुम्हें ले डूबेगा।" इतना कहकर जादूगर ने अपनी उंगलियाँ चटकाईं और चिंटू को वापस उसी छोटे-से चूहे में बदल दिया।

चिंटू अब फिर से वही कमजोर चूहा बन गया। वह जादूगर के सामने गिड़गिड़ाने लगा, लेकिन जादूगर ने कहा, "तुम्हारी असली शक्ति तुम्हारे रूप में नहीं, बल्कि तुम्हारे हौसले और बुद्धि में है। अपने डर का सामना करो और अपनी प्रकृति को स्वीकार करो।"

लज्जित होकर चिंटू अपने बिल में लौट गया। उसने समझ लिया कि बार-बार रूप बदलने से डर खत्म नहीं होता। उसने अपनी बुद्धि और चतुराई से जंगल में जीवित रहना सीख लिया और फिर कभी लालच नहीं किया।
सीख: यह कहानी हमें सिखाती है कि अपनी प्रकृति को स्वीकार करना और अपनी बुद्धि व हौसले से चुनौतियों का सामना करना ही असली शक्ति है। लालच और घमंड हमें हमेशा नीचे ले जाता।
हिन्दू धर्म में इतने सारे कन्फ्यूजन के बाद मेरा हिंदू धर्म पर से विश्वास ही उठ गया
Mj Barbhaya तुम्हारी कहानी सुनकर लगता है कि तुमने भक्ति के रास्ते में एक रोचक और गहन यात्रा की है, जो आध्यात्मिक खोज का

एक सुंदर उदाहरण है। तुम्हारा यह चक्र हनुमान से राम, फिर शिव, और वापस हनुमान तक यह दर्शाता है कि भक्ति और सत्य की खोज में मन कितना उत्सुक और जिज्ञासु हो सकता है। तुम्हारी बात में पंचतंत्र की कहानी का जिक्र भी बहुत सटीक है, क्योंकि यह चक्रव्यूह जैसा लगता है, जहाँ तुम बार-बार शुरुआती बिंदु पर लौट आए। लेकिन इस चक्र में एक गहरी सीख भी छिपी है।

पंचतंत्र की सीख: पंचतंत्र की कहानी में चूहा और ऋषि की तरह, तुम भी एक चक्र में घूमते हुए वापस उसी बिंदु पर आए। लेकिन यह चक्र व्यर्थ नहीं है। हर बार तुमने कुछ नया सीखा—हनुमान की भक्ति, राम का जीवन, शिव की महिमा। यह चक्र तुम्हें यह समझा रहा है कि सत्य की खोज में रास्ता उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मंजिल।

तुम्हारी यात्रा पंचतंत्र की कहानी जैसी नहीं है, क्योंकि वह चूहा भटक गया था, लेकिन तुम सत्य की खोज में आगे बढ़ रहे हो। यह चक्र तुम्हें यह सिखा रहा है तुम्हारी सोच और जिज्ञासा तुम्हें सही रास्ते पर ले जाएगी।

राहुल के सवालों के जवाब मिलना बाकी हे

राहुल का हिन्दू धर्म में भगवान को ढूंढ ने का सफर अभी भी जारी हैं बाकी अगले पार्ट में।

दुआ में याद रखना

(मुहम्मद मेहमूद)

इस **QR CODE** में सिर्फ लिल्लाह या हदीया की रकम से मदद करे।

जकात सदके के पैसे ना भेजे।

अकाउंट नाम मेहुल भाई जगदीश भाई है । जो **mj Barbhaya** यानी लेखक का अकाउंट हे। किताब फ्री है।